Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 23rd Mar. 2020, Revised on 28th Mar. 2020; Accepted 29th Mar. 2020

ARTICLE

कोरोना के भयावह काल में कमलवाणी सामुदायिक रेडियो स्टेशन की भूमिका

* डा.डी.पी.सिंह
प्राचार्य, श्रीमती रामादेवी महिला महाविद्यालय
सीएमडी, रेडियो कमलवाणी 90.4 एफएम
कमलनिष्ठा संस्थान, कोलसिया (झुन्झुनू) राजस्थान
Email-drdp91@gmail.com, Mobile–9001005900,9413366451
Website –www.kamalnishtha.org, Google App –Kamalvani

मुख्य शब्द *– कोरोना, कोविड–19, सामुदायिक रेडियो स्टेशन्स, शेखावाटी अंचल आदि।*

यह आलेख आंरभ करने से पहले यह भी विचार करना पड़ रहा है कि कौनसी बात पहले लिखूँ, कौनसी बाद में? नवम्बर 2019 में जब पहली बार कोरोना के लिए सुना तो ऐसा लगा कि चीन में उलटा–पुलटा खाते रहते हैं, इसलिए उनको हो गया, किन्तु शनै–शनै यह भयावह स्थिति नजदीक आती गयी और इसकी भयानकता समझ में आने लगी। इससे पहले सुना था कि भय के जितना नजदीक जाओगे, भय उतना ही कम हो जायेगा, किन्तु यह इससे विपरीत है। यह पहली बार है कि सरकार अपील कर रही है कि जीतने के लिए घर में छुप जाओ, बाहर मत निकला। जैसे–जैसे यह भयावह स्थिति हमारे नजदीक आती जा रही है, वैसे–वैसे इसके बहुत सारे रूप दिखाई देने शुरू हो गये तथा नित नये रूप लेकर लगातार डरा रहा है, दूनियां को खा रहा है।

आज संपूर्ण विश्व इस भयावह बिमारी से इतना भयभीत व चिन्तित है कि इससे पहले शायद ही कभी रहा हो, जिसके अन्त का अंदाजा लगाना भी आज मुश्किल हो गया है। इसके प्रत्यक्ष प्रभाव आज दिखाई दे रहे हैं, किन्तु जिस तरह यह वायरस अदृश्य बना हुआ है, उसी भांति इसके अदृश्य–अप्रत्यक्ष प्रभाव इससे भी भयावह होते लग रहे है। स्वास्थ्यगत परेशानियों के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक आदि कुप्रभावों का आकलन आज हर कोई नहीं कर रहा है, क्योंकि आज अस्तित्व पर प्रश्नवाचक चिन्ह पहले दिख रहा है।

दो–तीन दिन पहले मैंने एक मित्र को कुशलक्षेम पुछने के लिए फोन कर लिया, बातें हुई, किन्तु जो खास बात हुई वह थी कि मुझे स्नातक स्तर की पढ़ाई की तब तक हिन्दु–मुस्लिम समझ नहीं आया था, किन्तु मेरी दुसरी कक्षा में पढ़ने वाली बेटी कह रही है, कि ''ये कोरोना मुसलमानों ने फैला दिया''। मुझे यह सुनकर वाकई कोरोना से भी ज्यादा भय लगा। अनेक तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह मन–मस्तिष्क में बनने लगे तथा कोरोना के बहाने चीन–अमरीका, हिन्दु–मुस्लिम आदि का गहराता प्रश्न सताने लगा। प्रथम लॉक डाउन के तत्काल बाद राष्टीय राजमार्गों व सड़कों पर दिखने वाला भयावह मंजर किससे छिपा है? इस जले पर नमक छिड़कने के लिए तरह–तरह के बेलगाम सोशल मीडिया व मीडिया के कारनामों वाले संदेश, आखिर जाये तो जायें कहॉ?

इसी जिदोजेहद में राजस्थान के शेखावाटी अंचल के प्रथम सामुदायिक रेडियो स्टेशन ''कमलवाणी'' के संचालन की जिम्मेदारी निभाते हुए ज्यादा भी नही तो आसपास के ईलाके में कुछ इस तरह कार्य करने का स्वत्संज्ञान से कार्ययोजना तैयार करने का फैसला किया, जिससे परस्पर अप्रत्यक्ष प्रभाव अतिहावी हुए बिना कोरोना के प्रति जागृति का भाव उत्पन्न किया जा सके। इस कार्य के लिए बनाई गयी कार्ययोजना तथा संपन्न की गयी कियाकलापों को **कॉमनवैल्थ एज्युकेशनल मीडिया सेन्टर फॉर एशिया**Commonwealth Educational Media Centre for Asia (CEMCA)के द्वारा आयोजित वेबिनार्स के माध्यम से साझा किया गया, जिसकी मूल प्रति युट्यूब पर https://www.youtube.com/watch?v=SoOeBSowuVo तथा https://www.youtube.com/watch?v=71xWawm_NZ0 लिंक पर उपलब्ध है। इसमें मात्र कोरोना युग के प्रत्यक्ष प्रभावों

पर रेडियो कमलवाणी की कार्ययोजना व क्रियान्विति के संबंध में ही बातचीत करेगे। अप्रत्यक्ष प्रभावों पर आगे बात होगी। यहां उन्हीं स्लाईड्स को काम में लेते हुए अपनी बात प्रस्तुत कर रहा हूँ –

कोरोना सीआर डायरी

''कोरोना सीआर डायरी'' एक वेबिनार सीरीज है, जिसे **कॉमनवैल्थ एज्युकेशनल मीडिया सेन्टर फॉर एशिया Commonwealth Educational Media Centre for Asia (CEMCA)**सामुदायिकरेडियो स्टेशन्स के साथ मिलकर जारी किया हुआ है। 04 अप्रैल 2020 को इस वेबिनार सीरीज पर चर्चा हुई, ऑनलाईन चर्चा में सीरीज का नामकरण किया गया तथा उद्देश्य, चर्चा के तरीके का निश्चय किया गया तथा प्रथम दो रेडियो स्टेशन का चयन कर आगामी तिथि व समय का सुनिश्चय किया गया। इस सीरीज में प्रथम प्रस्तुतीकरण का दायित्व रेडियो कमलवाणी को दिया गया, जिसमें सामाजिक दायित्व से सीधे जुड़ें होने के कारण सामुदायिक रेडियों की बड़ी भूमिका पर चर्चा की गयी। सरकार द्वारा जारी किये गये दिशा–निर्देशों, माहमारी में बरती जाने वाली सावधानियों, रेडियो वर्कर, आरजे आदि के लिए निर्देशित ऐतिहात पर भी विचार–विमर्श हुआ तथा प्रसारण क्षैत्र में सामाजिक दायित्व के लिए जिम्मेदारी निभाने की भी बात की गयी। ध्यातव्य है कि भारतभर के 308 सामुदायिक रेडियो बिना सरकारी सहयोग के भी अपना दायित्व बहुत ही ईमानदारी–समर्पित भाव से निभा रहे है।

रेडियो कमलवाणी ने भी भारत में महामारी के लिए अपने प्रसारण क्षैत्र के लिए निःसंदेह बहुत ही विपरीत हालात एवं अपने अत्यल्प साधनों से बखुबी निभाया है। चूंकि, भारत में केरल के बाद झुन्झुनू में ही कोरोना के रोगी मिले थे, जो कि पूरे राजस्थान में प्रथम थे। जिसमें पहले इटली से भ्रमण पर आये दल के तीन सदस्य तथा बाद में यहां के स्थानीय निवासी, जो कि इटली में ही नौकरी करते हैं, के तीन सदस्य इससे संक्रमित पाये गये, जिससे चारों और खलबली मच गयी एवं एक नई चुनौती सामने आ खड़ी हुई, जिसके लिए रेडियो कमलवाणी ने आंरभ से ही अपना दायित्व बखुबी निभायी।

रेडियो कमलवाणी – एक परिचय

''शेखावाटी की शान–औ–आवाज'' की टैगलाईन के साथ राजस्थान में पांचवें तथा इस अंचल के प्रथम सामुदायिक रेडियो स्टेशन ''कमलवाणी'' को प्रसारण लाईसेन्स 22 नवम्बर 2012 को प्राप्त हुआ, हालांकि इस रेडियो ने अपना टेस्ट–प्रसारण शिक्षक दिवस के अवसर पर 05 सितम्बर 2012 को ही आरंभ कर दिया था, तथा लाईसेन्स प्राप्त होने तक प्रतिदिन दो घण्टे की टेस्ट–प्रसारण सेवायें आरंभ कर दी थी। इसका प्रसारण राजस्थान के झुन्झुनू एवं सीकर जिलों के कोई 08 ब्लॉक, 428 गांवों में 25 लाख से अधिक की जनसंख्या तक सीधे पहूँच रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित कमलवाणी रेडियो स्टेशन ने अपने आरंभकाल से ही अपने कार्य्रकमों का अधिकतम भाग स्थानीय मुद्दो, चुनौतियों, बोली–भाषा, लोकाचार, रहन–सहन, खानपान, जनजीवन पद्धति, रीति–रिवाजों, धरोहर, कारोबार, सफल कहानियों आदि को ही समर्पित किया है तथा ईलाके में निवास करने वाली प्रत्येक कम्युनिटी यथा – कृषक, सैनिक, कारीगर, विद्यार्थी, महिला आदि सभी के लिए कोई–ना–कोई नियमित कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है। चूंकि, ईलाके के लोग दूरदराज के शहरों, दूसरे देशों, सेना में नौकरी, व्यापार आदि में कार्यरत है, अतः स्थानीय कम्युनिटी तक तथा स्थानीय कम्युनिटी तक जोड़ने के लिए Google App – kamalvani तथा Broadcast App, Phone-in-Call पर भी प्रसारण को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

इस पर भी विशेष कि प्रसारित होने वाले कार्यक्रम समुदाय की सहभागिता को सुनिश्चित कर तैयार किया जाता है। डीएसटी का ''रेडियो मैथेमैटिक्स'' रेडियो कार्यक्रम स्थानीय अशिक्षित अथवा अल्पशिक्षित महिलाओं ने तैयार कर प्रसारित किया, जो कि अपने आप में नायाब उदाहरण है।

कोरोना काल में क्षैत्र की चुनौतियां

1. अस्वीकार्यता की मनोवृत्ति एवं निम्न जागरूकता स्तर (Non-Acceptability Attitude & LowAwareness Level)

रेडियो कमलवाणी के क्षैत्र में सबसे बड़ी चुनौती आमजन का अस्वीकार्य व्यवहार सामने आया, कोरोना वायरस की कहानियां सुनकर भी अनसुनी कर बेपरवाही दिखाना स्वत्–स्वभाव बन गया है। कै हांवै है, कुण देख है, कींकि हिम्मत है, मैन घड़गी बाड़ै मैं बड़गी, ज्यादा ग्यान मना दे, तेरो ग्यान तेरे कनै राखै, आदि–आदि। हमें इसका तोड़कर कोरोना की आने वाली भयावह एवं जागरूक रहने की स्थिति से अवगत करवाकर सावधान कर देना बड़ी चुनौती थी। इसके साथ ही टेलीविजन, मोबाईल फज्ञेन, सोशल मीडिया आदि होने के बावजूद भी गांवों के लोगों में बाहर की जानकारी के प्रति अल्प जागरूकता का स्तर भी चुनौती रही है।

2. आदत, परम्परा व विश्वास (Habit, Tradition & Belief System)

प्रायः कहा जाता है कि आदमी अपनी आदतों का दास होता है, इस ग्रामीण अंचल के लिए यह शत–प्रतिशत सही है। जागने, उठने–बैठने, खानपान, समय आदि के लिए अनियमितता इनका स्वभाव है। सार्वजनिक स्थानों पर झुण्ड में ताशपत्ती खेलना, सामुहिक शराब सेवन, सामुहिक चिलमपान, धुम्रपान आदि स्वभाव में है। साथ ही पुजापाठ, पाखण्ड की परम्परायें, डोरा–जन्तर, झाड़फूंक, पीलिया–टाईफाईड, रींगणबाय, मासिकधर्म की अनियमितताओं पर भी डोरे व झाड़े लगवाना आदि तरह तर्कहीन विश्वास प्रचलन में आज भी है।

3. सही सूचनाओं का अभाव (Lack of Proper Information)

तार्किकता व सूचनाओं के अभाव के कारण अफवाहों का बहुत प्रभाव बना रहता है। जो जैसा कहदे उसे मान लेना तथा आगे–आगे कहना अपना दायित्व मानने की स्थिति है। सही सूचनाओं के अल्प स्रोत होने, सही समय पर सही समचना नहीं मिल पाना क्षैत्र की स्थायी चुनौती है। कोरोना जैसी भयावह बिमारी को भी चीन–अमरीका चाल, राजनैतिक दलों का स्टंट, ऊपरवाले का प्रसाद मानकर सावधानी बरतना अपनी तौहिन मानना अलग चुनौती है।

कार्यान्वयन योजना

उक्त वर्णित चुनौतियों को मनमस्तिष्क में रखकर रेडियो कमलवाणी ने मानवीय साधनों की कमी के बावजूद अपनी कार्ययोजना तैयार की, जिसमें कोरोना की भयावहता, ग्रामीण क्षैत्र में स्वास्थ्य सेवाओं के वर्तमान स्तर को ध्यान में रखते हुए हमने आसपास के क्षैत्र को केन्द्रित कर कार्य आरंभ किया।

1. समन्वयन (Coordination)

क्षेत्र की चुनौतियों से प्रत्यक्ष रूबरू होने के लिए कमलवाणी रेडियो ने त्रिस्तरीय समन्वयन करना सुनिश्चित किया गया। प्रथम, स्थानीय सक्रिय युवा, ग्रामीणजन, ग्राम पंच व सरपंच आदि जो कि अपने पड़ौसी को समझाईस करें व बाहर से आने वाले लोगों पर निगाह रखे व उनकी जानकारी प्रदान करें। द्वितीय, आसपास के गांवों के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं से संपर्क किया गया तथा बाहर से आने वाले लोगों की सूची एवं ग्राम पंचायत के पास उपलब्ध सूची को परस्पर नियमित मिलान कर दुरूस्त करते रहे एवं जांच आदि की नियमित सूचना भी परस्पर जानकारी लेते रहें। तृतीय, स्थानीय प्रसाशन, जिला कलेक्टर, उपखण्ड अधिकारी, चिकित्साधिकारी आदि पर चूंकि अत्यधिक दबाव होने से मदद के लिए प्रथम व द्वितीय समूह के साथ संवादकर जोड़ा गया, संभावित हल की सूचनाओं को भी परस्पर बांटते रहे, ताकि त्वरित कार्यवाही संभव हो सके।

2. अभिप्रेरणा (Motivation)

कोरोना काल में स्थानीय लोगों को भयावहता एवं सावधानियां समझाने के लिए इसी ईलाके के उन लोगों के संदेश प्रसारित किये जो कि विदेश यथा – दुबई, इटली आदि अथवा बाहर शहरों यथा – मुम्बई, पुणे में रहकर काम कर रहे है तथा उन्होनें इस खतरनाक मंजर को देखा–अनुभव किया है। साथ ही स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों, चर्चित लोगों, फिल्म–खेलकूद सितारों, जनप्रतिनिधियों के संदेश भी प्रसारित किये। इसके अलावा संसाधनों, भोजन, मास्क, दवा आदि के लिए ईलाके के भामाशाओं को प्रेरित किया गया। जिनमें बड़े उद्योगपतियों से लेकर स्थानीय दर्जी का काम करने वालों तक सभी को शामिल किया गया।

3. तकनीकी का उपयोग (Use of Technology)

कोरोना रोग की भयावह प्रकृति के कारण व्यक्ति से व्यक्ति को दूरी बनाना पहली आवश्यकता है। इस सोशल डिस्टेन्सिंग रखने के लिए व्यक्तिशः संपर्क कर सूचना संप्रेषण करना असंभव है, जिसके हल के लिए ग्राम स्तर के व्हाट्स ग्रुप सृजित किया गया तथा सही, विश्वसनीय सूचनाओं को ही प्रसारित करने दिया गया। इसके अतिरिक्त रेडियो कमलवाणी की ब्रॉडकास्ट एप्प को आसपास के गांवों तक बढ़ाई गई व निर्धारित समय पर अपने अनुभव सांझा करने लगे। हालांकि रेडियो स्टुडियो पर बहुत अधिक स्टॉफ को निरन्तर नहीं कर पाये किन्तु सीमित लोगों के बावजूद स्टुडियो से फोन–इन–प्रोग्राम को भी सही व सकारात्मक सूचनाओं के प्रसारण का प्रयास किया गया।

4. रोकथाम (Prevention)

इस महामारी की स्थिति में चारों और अजीब–अवर्णित भय के वातावरण में समन्वयन समूह द्वारा होम कोरोन्टाईन में रखे लोगों को प्रशासन के अलावा व्यक्तिगत रूप से ऑब्जर्व करवाया गया, ताकि सामाजिक संक्रमण को रोका जा सके। किन्तु कुछ लोग इस पर भी नहीं रूके, तो स्थानीय प्रशासन की जानकारी में लाकर उचित कानूनी कार्यवाही करवाकर रूकवाया गया।

इस ग्रामीण ईलाके की अस्वीकार्यता की मनोवृति के कारण लोग संपूर्ण लॉकडाउन के बावजूद चोरी–छिपे सामाजिक उत्सव आयोजित करवाते जा रहे थे। चूंकि, इस समय पुलिस तथा स्थानीय प्रशासन अत्यधिक दबाव में हो रहे हैं, अतः पुलिस आने का भय दिखाकर भी सार्वजनिक भोज व उत्सवों को रूकवाया। इस स्थिति में भी सार्वजनिक स्थानों पर ताशपत्ती खेलना, गपशप करना, अनावश्यक घुमना–फिरना आदि को रोकने के लिए समन्वयन समिति के लोगों ने समझाईश की, तथा नहीं मानने वालों की कुछ पुलिस की मदद लेकर डण्डा–परेड भी करवायी।

इनके अलावा लोटा–पार्टी अर्थात खुले में शौच जाने वालों की एक विकराल समस्या भी अभी तक भी प्रचलन में थी। हमने इनकी जानकारी एकत्रित कर ग्राम पंचायत को साथ लेकर घर–घर जाकर समझाया तथा अप्रत्याशित सफलता मिली किन्तु कुछ शेष लोगों को ग्राम पंचायत सरपंच द्वारा सरकार से शौचालय बनाने के लिए मिली सहायता वापस जमा करवाने तथा लौटा लेकर जाने पर फोटो खींचकर प्रशासन के व्हाट्सएप्प पर डालने की कहना असरकारी रहा। हालांकि शत–प्रतिशत सफलता फिर भी नहीं मिली।

सामुदायिक रेडियो कमलवाणी का प्रभाव

रेडियो कमलवाणी ने रास्ते के सिग्नल की त्रिस्तरीय व्यवस्था को कोरोना की रोकथम में भी आधार बनाया। जिस प्रकार सिग्नल में लालबत्ती रोकने के लिए, पीली बत्ती देखने/इन्तजार/विचार करने के लिए तथा हरी बत्ती आगे बढ़ने/शुरू होने के लिए है, उसी भांति हमने भी रोकने–विचार करने–शुरू करने में श्रेणीबद्ध किया, यथा –

1. **रोके– बुरी आदत (Stop-Bad Habits)**

अनावश्यक घुमना–फिरना, सामूहिक गपशप, सामाजिक उत्सव आयोजन, सामुहिक धुम्रपान, हुक्का–बीड़ी–चिलम का उपयोग, चुईंग्गम खाना, पान–गुटखा चबाना, ताशबत्ती–चौपड़ खेलना, बासी–ठण्डा भोजन, बाजार से सब्जी आदि अधिक खरीदना, हाथ आदि साफ नहीं करना, बर्तनों की कम स्वच्छता, झाड़–फूंक, डोरा–जन्तर, अन्धविश्वास, शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन आदि।

2. **विचार करें–सुरक्षित जीवन (Think-Safe Life)**

सकारात्मक विचार, रचनात्मक घटनाऐं, सफलता कर कहानियों का अध्ययन, खाने–पीने–रहने–पहनने की स्वच्छता व गुणवत्ता, नियमितता, राजकीय निर्देशों की पालना आदि

3. **शुरू करें–सुआदत (Start-Good Practices)**

सकारात्मक व रचनात्मक विचारों के लिए स्वीकार्यता, जीवनशैली को स्वच्छता–स्वस्थता की और बदले, समय–समय पर जारी राजकीय निर्देशों का अक्षरशः पालन करने का सुनिश्चय करना आदि।

रेडियो कमलवाणी ने कार्यक्रमों, लाईव ब्रॉडकास्ट, गुगल एप्प, समन्वयन समूह के माध्यम से कार्य करना, आदि को नियमित प्रचार–प्रसार कर रहा है।

कार्य सार

1. **सामाजिक दूरियां (Social Distancing) –**

हालांकि अध्ययन तथा समय–समय पर मिलने वाली जानकारी के अनुसार कोरोना हवा से नहीं फैल रहा है, किन्तु प्रम्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप में संपर्क में आने/छुने से फैलता है, अतः इससे बचने के लिए सामाजिक दूरियां बनाये रखना आवश्यक है।

1. **मास्क पहने तथा सेनेटाईजर उपयोग में ले (Wear Mask & Avail Senitizer) –**

कोरोना के खतरे से बचने के लिए यह आवश्यक है कि आप अपने मूँह पर दो या तीन स्तर वाला मास्क अवश्य पहने। इस संबंध में ग्रामीण क्षैत्र के लोगों को मास्क क्या होता है तथा बाजार में मिलने वाले मास्क मंहगे एवं उपलब्धता की

कमी के कारण स्थानीय दर्जी का ाकम करने वाले लोगों को सामान्य जानकारी प्रदान कर उत्साहित किया, जिससे वे स्थानीय स्तर पर मास्क की सिलाई करने लगे, जिसे रेडियों के माध्यम से प्रचारित किया, ताकि दूसरी जगह भी ऐसा संभव हो सके।

2. **घर में सकारात्मक रहिऐ (Stay Positive at Home)**

सरकार द्वारा निर्देशानुसार सभी लोगों को घर में ही रहना है, जिससे कोरोना से बचाव हो सके। किन्तु इसका एक और पक्ष अधिक समय तक घर में ही रहने से उत्पन्न होने वाला तनाव भी है। अतः हमने लोगों को रेडियो के माध्यम से समझाया कि घर में रहे, इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि आप सकारात्मक बनकर घर में रहे ताकि यह रहना आसान बना रह सके। इसके लिए अल्पसाधनों के बावजूद कमलवाणी ने अपना प्रसारण समय 10 घण्टे से बढ़ाकर 24 घण्टे कर दिया ताकि लोगों को घर पर समय व्यतीत करने का एक यह भी बहाना निरन्तर बना रहे।

एक तस्वीर ही काफी है

कोरोना के संदेश को जन–जन तक पहूँचाने तथा इसकी भयावहता समझने के लिए उक्त तस्वीर के अलावा अधिक शब्दों में विवरण देने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। पैन की नोक हम सभी के लिए इससे आगे ना बढ़ जाये, हम सभी मिलकर प्रयास करे।

गांधी संदेश

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के उक्त कथन को ही रेडियो कमलवाणी ने इस कोरोना महामारी के काल में अपने कार्य–संदेशों का आधार बनाया तथा बहुत सारे उपदेश देने की बजाए आम ग्रामीण जन को कोरोना के लिए सावाचेत करने के लिए एक–एक कदम सुनिश्चित कर उन पर अभ्यास करना तथा कार्य परिणति की स्थिति

सुनिश्चित करने के लिए निरन्तर आगे बढ़ रहे है। आईये, हम सभी उक्त अवधारणा के लिए कृतसंकल्प होकर पारस्परिक मतभेद भूलकर कोरोना युद्ध की जीत के लिए आगे बढ़े।

आपका धन्यवाद

*** Corresponding Author:**
डा.डी.पी.सिंह
प्राचार्य, श्रीमती रामादेवी महिला महाविद्यालय
सीएमडी, रेडियो कमलवाणी 90.4 एफएम
कमलनिष्ठा संस्थान, कोलसिया (झुन्झुनू) राजस्थान
Email-drdp91@gmail.com, Mobile–9001005900, 9413366451
Website –www.kamalnishtha.org, Google App –kamalvani